Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

राजीव सिंह
शोधकर्त्ता, एम0ए0, एम0एड्0, नेट
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।
डॉ0 प्रेम चन्द यादव
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर,
बी0एड्0 विभाग, श्री गाँधी पी0जी0 कालेज, मालटारी, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4 Issue 4
Page Number : 79-83

Publication Issue :
July-August-2021

Article History
Accepted : 15 July 2021
Published : 30 July 2021

सारांश– समस्या कथन में महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में आजमगढ़ मण्डल के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों से है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों (200 कला वर्ग, 200 विज्ञान वर्ग एवं 200 व्यवसायिक वर्ग) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। धर्मनिरपेक्षता के मापन हेतु अंशु मेहता एवं दुर्गानन्द सिंह द्वारा निर्मित 'धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति' मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) विधि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में– महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में भिन्नता है अर्थात् कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में अन्तर है जबकि कला एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में समानता पायी गयी अर्थात् संकाय के आधार पर विद्यार्थियों पर धर्मनिरपेक्षता पर प्रभाव पाया गया।

मुख्य शब्द– उच्च शिक्षा, छात्र एवं छात्राएँ, कला, विज्ञान, व्यवसायिक वर्ग, धर्म निरपेक्षता, अभिवृत्ति, तुलना।

प्रस्तावना– वर्तमान में धर्मनिरपेक्षता व सहिष्णुता केवल राजनैतिक व सामाजिक स्तर पर ही नहीं वरन् यह विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में भी दिखाई देने लगी है। वर्तमान सहिष्णुता व धर्मनिरपेक्षता का विद्यालयी उदाहरण विश्व स्तर पर पेरिस में देखने को मिला जहाँ एक 18 वर्षीय छात्र ने अपने शिक्षक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

की हत्या कर दी थी। इस घटना ने विश्व में बहस को छेड़ दिया कि क्या कुछ धर्म वाले वाकई में सहिष्णु होते हैं।

किसी भी धर्म में हर व्यक्ति को स्वतंत्रता से सोचने और बोलने की आजादी है और किसी को यह अधिकार नहीं कि वह धर्म व सम्प्रदाय के आधार पर किसी कि स्वतंत्रता व सामाजिकता को सीमित करने का प्रयास करें। समाज में नकारात्मक सोच व हिंसा चरमोत्कर्ष पर पहुँच रही है। यह राजनैतिक व वैचारिक दिवालियेपन की मिसाल है। किसी भी धर्म को व्यक्ति को व समाज के सारी नकारात्मकता का त्याग कर अपनी समस्त ऊर्जा को बौद्धिक पुनर्जागरण में लगाने की जरूरत है। आज हम लोकतंत्र व वैज्ञानिक सोच के युग में जी रहे है जिसने दुनिया का चेहरा बदल कर रख दिया है। समाज में शांति रखना किसी भी राजनीतिक उद्देश्य से बड़ा काम है। विचारों में बदलाव लाने की आवश्यकता है तभी आने वाली पीढ़ियों के समक्ष सही उदाहरण स्थापित किए जा सकते हैं। प्रसिद्ध फ्रांसिसी दार्शनिक वाल्टेमर ने धर्मनिरपेक्षता व धार्मिक असहिष्णुता के मुद्दे पर कहा था कि इसके सही अर्थ को समझने के लिए किसी महान कला की आवश्यकता नहीं है केवल यह समझने की आवश्यकता है कि हम सब एक है और सबको बनाने वाला ईश्वर एक है।

वर्तमान भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राष्ट्र विरोधी राजनीति का प्रचलन जोरों पर है। राष्ट्रविरोधी तत्व धर्मनिरपेक्षता के नाम पर उत्पात मचाकर समाज में असंतुलन उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे है। अक्सर चुनाव पूर्व सामाजिक उथल–पुथल व धार्मिक वैमनस्य फैलाने का प्रयास किया जाता है। इसका कारण सामाजिक व जातीय विभाजन है जो भारतीय समाज में गहरी पैठ बना चुका है जो राजनीति की रोटियाँ सेकने के लिए एक उचित तावा प्रदान करता है।

वर्तमान समय में व्यक्ति अत्यधिक लालची प्रवृत्ति का होता जा रहा है। वह पैसा बटोरने में व्यस्त है। उसमें चारित्रिक पतन हो रहा है। बहुत से व्यक्ति चोर, डकैत, चोर व्यापारी तथा यौनाचारी बन गये हैं, जिसमें धार्मिक मूल्यों में गिरावट आई है। व्यक्ति नैतिक तथा चारित्रिक रूप से धर्म विरूद्ध कार्य करने लगे हैं। स्वार्थ के लिए जाति–पॉति, ऊँच–नीच, हिन्दू–मुस्लिम, मन्दिर–मस्जिद आदि के झगड़े भी धार्मिक मूल्य की गिरावट का एक मुख्य कारण है। लोगों की धार्मिक आस्था विश्वास इन क्रियाकलापों से घटा है तथा इन मूल्य में गिरावट आई है। नैतिकता के विकास में धर्म अपना योगदान नहीं कर पा रहे हैं।

आधुनिक विद्यार्थी वर्ग संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। एक ओर प्रतिस्पर्धा के युग में उसे अधिकाधिक उपाधियों के अर्जन हेतु सतत् प्रयत्नशील रहना होता है तो वहीं दूसरी ओर उस पर प्रेम, सहयोग एवं सहानुभूति जैसे मानवीय संवेदनाओं से रहित परिवार एवं समाज की उच्चाकांक्षाओं का दबाव रहता है। जिसमें युवा वर्ग असुरक्षित भविष्य की सम्भावना से चिन्तित, तनावग्रस्त एवं दुविधाग्रस्त रहता है। ऐसे अशान्त मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थी को स्तुति, भक्ति तथा साधना जैसे धार्मिक मूल्य असीम शान्ति एवं आत्म–सन्तोष प्रदान करते हैं।

आज की शिक्षा प्रद्धति भी कुछ हद तक मुख्य कारण हैं, धार्मिक मूल्यों की गिरावट के लिये। आज की शिक्षा नैतिकता व धार्मिकता विहीन दिखाई पड़ती है, जिसके कारण विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता चरम सीमा पर है। विद्यार्थियों में गिरती हुई धार्मिक मूल्य में वृद्धि के लिए धर्म से सम्बन्धित शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है जिसमें विभिन्न प्रकार के धर्मों की शिक्षा को सम्मिलित करना अत्यन्त आवश्यक है।

समस्या कथन– महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य– अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं– प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध–प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में आजमगढ़ मण्डल के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों से है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों (200 कला वर्ग, 200 विज्ञान वर्ग एवं 200 व्यवसायिक वर्ग) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। धर्मनिरपेक्षता के मापन हेतु अंशु मेहता एवं दुर्गानन्द सिंह द्वारा निर्मित 'धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति' मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण) विधि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता का तुलनात्मक अध्ययन।**

H_{O1} महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में अन्तर का एफ–मान

स्रोत	स्वतंत्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	प्रसरण–मान (F-Value)
समूहों के मध्य	2	9914.54	4957.27	32.10*
समूहों के अन्दर	597	92192.95	154.43	
कुल	**599**	**102107.49**	**5111.70**	

*0.05 स्तर पर सार्थक

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता के मध्य एफ–मान 32.10 जो .05 पर सार्थक है। अतः शू0 परि0 ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है'', .05 स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में भिन्नता है।

सारणी सं0 1.1

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	विद्यालय	छ	ड	σD	व	ज.अंसनम
1.	कला वर्ग	200	108ए52	1ए24	8ए49	6ए83′
	विज्ञान वर्ग	200	117ए00			
2.	कला वर्ग	200	108ए52	1ए24	0ए27	0ए22
	व्यवसायिक वर्ग	200	108ए25			
3.	विज्ञान वर्ग	200	117ए00	1ए24	8ए76	7ए05′
	व्यवसायिक वर्ग	200	108ए25			

*0.05 स्तर पर सार्थक

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता का मध्यमान क्रमशः 108.52, 117.00 एवं 108.25 है। कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग मध्य टी–अनुपात मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से अधिक है, जो सार्थक है। कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में अन्तर है जबकि कला वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता के मध्य टी–अनुपात मान 0.05 स्तर पर दिये गये मान से कम है, जो असार्थक है। अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में अन्तर है जबकि कला एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में समानता पायी गयी।

निष्कर्ष–अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता में भिन्नता है अर्थात् कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में अन्तर है जबकि कला एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों के धर्मनिरपेक्षता में समानता पायी गयी अर्थात् संकाय के आधार पर विद्यार्थियों पर धर्मनिरपेक्षता पर प्रभाव पाया गया।

सुझाव–

- भारतीय समाज एक बहुसांस्कृतिक समाज है, जिस पर हम गर्व महसूस करते है व प्रत्येक संस्कृति के प्रति आदर की भावना रखते है लेकिन दूसरे सामाजिक समूहों व उनकी संस्कृति के बारे में विद्यार्थी तभी ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे जब वह उनके हृदयस्पर्शी होंगी और यह तभी संभव हो पाएगा जब विद्यार्थी एक दूसरे की संस्कृति, धार्मिक विश्वासों, मानको के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर पाए।
- सभी विद्यार्थियों का एकत्रित करके प्रतिदिन प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाना चाहिए। प्रातः सभा में प्रार्थना के साथ–साथ सुविचार, श्लोक, वक्तव्य, नवीन विचार भी सुनाए जाने चाहिए एवं विद्यार्थियों द्वारा उनकी व्याख्या भी की जानी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, जितेन्द्र (2017). भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया में पंथनिरपेक्षता का अनुप्रयोग, इण्डियन जे. सोशल एण्ड पॉलिटिक्स, 04(02). पृ0 137–142
2. कुमारी, रीमा (2010). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता तथा समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण, वी0ब0 सिंह पू0वि0वि0 जौनपुर, अप्रकाशित शोध सं0 1323, पृ0सं0 126
3. जायसवाल, निशा (2019). धर्मनिरपेक्षता : भारतीय सन्दर्भ, इण्डियन जर्नल साइंस एण्ड पॉलिटिक्स, 06(01). पृ0 63–66
4. तिवारी, एन.पी (2018). सेकुलरिज्म : भारतीय संदर्भ, दार्शनिक त्रैमासिक (यू.जी.सी. से मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका). वर्ष 64, अंक–2, अप्रैल–जून 2018, पृ0 1–7
5. म0एस0गोरा(1996). उद्धरत विपिन चन्द्र, (2005). आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता एवं समाज का एक अध्ययन द्वितीय संस्करण , नेशनल बुक डिपों नई दिल्ली, पृ0 सं0 113–114
6. यादव, संजय (2013). उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।